अध्याय – 9
क्षेत्र 'द' प्रवृत्ति समूह

9.1 भवन एवं फर्नीचर का रखरखाव

संसार में जितने भी प्राणी है सारे पशु पक्षी हों, कीड़े हों, कीड़े–मकोड़े हों, जंगली जानवर हो सभी को अपने रहने के लिए कहीं न कहीं आवास बनाना पड़ता है। पक्षी वृक्षों पर घौंसला बनाते हैं या पुराने मकानों की दीवारों में या रोशनदानों में घोंसला बनाते हैं। जंगली पशु जंगलों में गुफाओं में रहते हैं या चट्टानों में कहीं न कहीं अपने लिए सुरक्षित स्थान की तलाश करते हैं। जलचर जल में अपने आप को सुरक्षित मानते हैं। इसी प्रकार मनुष्य भी सर्दी, गर्मी, धूप व वर्षा से बचाव हेतु अपने आप को सुरक्षित बनाये रखने के लिए एक निश्चित आवास बनाता है। मनुष्यों का आवास न केवल प्राकृतिक बाधाओं से सुरक्षा के लिए होता है अपितु मानव अपने सामाजिक जीवन को जीवन पर्यन्त विकसित करने के लिए अपना निश्चित व सुंदर आवास बनाने का प्रयास करता है। मानव के लिए सुंदर आवास न केवल उनके जीवन के लिए ही आवश्यक है अपितु उसकी सामाजिक प्रगति, सांस्कृतिक उन्नति व स्थाई वंश परंपरा को भावी पीढ़ियों तक ले जाने के लिए भी आवश्यक है। मकान बनाते समय मनुष्य यह समझता है कि मेरा जीवन भले ही क्षणिक हो परंतु मेरा मकान ऐसा होना चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ियाँ उसमें रहकर अपने आपको सुरक्षित महसूस करें।

मनुष्यों के रहने के आवास कई तरह के होते हैं। गाँवों में रहने वाले व्यक्ति अधिकतर कच्चे मकानों में रहते हैं जो सामान्यतया कच्ची ईंटों व पत्थरों से बनाए जाते हैं। इनकी छप्पर या खपरैल की जाती है। कच्चे मकानों की दीवारों पर अधिकतर गोबर और चिकनी मिट्टी से लिपाई की जाती है। इसको कलई या खड़िया मिट्टी या रंगों से पोत दिया जाता है।

शहरों में रहने वाले व्यक्तियों के आवास पक्के बने होते हैं। मकान चाहे कैसा भी हो, स्वास्थ्य की दृष्टि से वह स्वच्छ होना चाहिए तथा टूटा–फूटा नहीं होना चाहिए। यदि मकान में टूट–फूट है तो समय–समय पर उसकी मरम्मत करनी चाहिए तथा उसकी लिपाई व पुताई भी करते रहना चाहिए।

9.1.1 भवन की पुताई व रंगाई करने की आवश्यकता

मकान चाहे जितना सुंदर विशाल और स्वास्थ्य वर्द्धक हो। किन्तु यदि वह स्वच्छ और व्यवस्थित नहीं रखा जाय तो सब व्यर्थ हो जायेगा। घर की स्वच्छता पर उसमें रहने वाले परिवार के सदस्यों के स्वास्थ्य निर्भर रहता है। गंदगी हवा को दूषित करती है तथा अनेक कीटाणुओं की वृद्धि में सहायक बनती है। ये कीटाणु अनेक प्रकार के रोगों को फैलाते हैं। अतः भवन को सुंदर व साफ रखने के लिए लिपाई–पुताई एवं रंगाई, फर्नीचर, लोहे के सामान पर रंग व पॉलिश कराना आवश्यक है। जिसे छात्रों को जानना बहुत जरूरी है।

9.1.2 भवन की पुताई

यदि दीवार मिट्टी की है तो उसकी लिपाई के लिए गोबर में पीली मिट्टी या चिकनी मिट्टी मिलाकर लिपाई करनी चाहिए।

1. लिपाई करने से पूर्व उस स्थान की झाड़ू से जाले एवं गंदगी को साफ करना चाहिए।
2. मकान की आकृति के अनुसार पीली मिट्टी एवं गोबर की मात्रा लेकर एक बड़ी तगारी में पानी

मिलाकर गोल तैयार करना चाहिए।

3. लिपाई करते समय हाथ को सीधी रेखाओं में समान रूप से घूमना चाहिए ताकि लिपाई भी सुंदर हो, और कोई स्थान छूट न पाये।
4. लिपाई सूखने के बाद झाड़ू घुमा देना चाहिए।
5. लिपाई करने के बाद भवन की पुताई खड़िया मिट्टी व गेरू से की जाती है।
6. मकान की सफेदी एवं गेरू से अलग–अलग चित्र (रंगोली) बनाकर दीवारों व आंगन को सुंदर सजाया जा सकता है।

9.1.3 भवन (मकानों) की पुताई

पक्के मकानों को साफ–सुथरा रखने के लिए दीवारों पर पुताई की जाती है। दीवारों की पुताई करने के लिए निम्नलिखित सामग्री की आवश्यकता होती है–

1. कली (चूना)
2. नील
3. गोंद
4. डी.डी.टी.
5. पोतने की कुंची
6. कली को छानने के लिए कपड़ा
7. झाड़ू, लकडी का डंडा
8. बर्तन–बाल्टी, कलई (चूना) घोलने का ड्रम आदि।
9. ऊंचाई तक पहुंचाने हेतु निशन्नी (सीढ़ी), बड़ा स्टूल

9.1.4 पुताई क्रिया

कली (चूना) को पुताई करने के एक दिन पहले गला देना चाहिए। इससे वह गल जाने और ठंडी हो जाये। दूसरे दिन कली को किसी लकड़ी से हिलाकर कली में पानी डाल घोल कर एक समान कर देना चाहिए। इसके बाद कपड़े से बाल्टी में छान लेना चाहिए इससे मोटे कंकड़ अलग हो जाये। इसके पश्चात इस घोल में आवश्यकतानुसार नील पानी में अलग घोलकर मिला देना चाहिए। 10 x 10 x 10 नाप के कमरे पुताई करते समय 200 ग्राम गूंद पानी में घोलकर मिला दें और इसकी 100 से 150 ग्राम डी. डी.टी. पानी घोलकर मिला दे।

इसके बाद कली करने से पहले मकान दीवारों एवं छतों पर झाँडू लगा कर सफाई कर लें। अगर दीवार टूट–फूट हुई है तो उस स्थान पर सीमेंट, चूना या प्लास्टर ऑफ पेरिस लगाकर मरम्मत कर देना चाहिए। इसके बाद कूची (पोतनी) या बड़े ब्रुश से पुताई कर लेना चाहिए। पुताई दो बार करनी चाहिए। इसे भवन में कोई स्थान छूट न पायेगा तथा सफाई व सुंदर पुताई होगी।

सावधानियाँ

1. पुताई करते वक्त कलई या चूने को अपने शरीर एवं हाथ पर नहीं गिरने देना चाहिए इससे हाथ फटने एवं घाव होने का भय रहता है।
2. कलई या चूना के छांटे आँख में गिरने से बचने के लिए सफेद चश्मे का उपयोग करना चाहिए।
3. कलई करते समय कूची पकड़ते वक्त हाथ में रबड़ मौजे या प्लास्टिक की थैली का उपयोग करना चाहिए।

9.1.5 भवन पर रंग करना

पक्के मकान को सुंदर एवं स्वच्छ रखने के लिए तीन प्रकार से रंग किया जाता है–

1. साधारण डिस्टंबर द्वारा या सममोसम द्वारा

2. ऑयल डिस्टंबर द्वारा या वॉशबल डिस्टंबर

3. वार्निश द्वारा (आयल पेंट)

आजकल डिस्टंबर बंद डिब्बे में मिलता है। सामान्यतया 10x10x10 के कमरे के लिए 4 किलोग्राम डिस्टंबर पर्याप्त रहता है और 4 इंच का अच्छी कंपनी का ब्रश ले।

डिस्टंबर करने के लिए गर्म पानी में डिस्टम्बर को घोलना चाहिए। पानी इतना ही गर्म हो कि उसमें आसानी से हाथ से डिस्टम्बर घोला जा सके। फिर ब्रश द्वारा दीवारों पर सावधानी से रंग करना चाहिए। एक बार रंग करने के बाद रंग सूखने देना चाहिए तथा दुबारा एक बार रंग करना चाहिए इससे सफाई पूर्ण रंग आ जाता है। धब्बे भी नहीं रहते हैं।

सावधानी

1. रंग करने के पश्चात् हाथों को मिट्टी तेल से साफ करना चाहिए इसके बाद साबुन से हाथ साफ कर लेना चाहिए।

2. सममोसम रंग करते समय पहले दीवारों पर पानी डालना चाहिए बाद में रंग करना चाहिए।

9.1.6 आयल डिस्टेम्बर

आधुनिक तकनीक रंगों के आयल में बनाया जाता है। यह आयॅल डिस्टेम्बर दीवार पर साधारण डिस्टेम्बर की तरह ब्रुश से किया जाता है। लेकिन इस रंग के घोल को पतला करने के लिए थिनर या तारपीन आयल का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार के डिस्टेम्बर करने से दीवारों पर चमक अधिक होती है और यह डिस्टेम्बर कपड़ों एवं शरीर के अंग दीवार रंगडने से उतरता नहीं और कपड़े भी खराब नहीं होते हैं, तथा समय–समय पर इसकों रंग की दीवारों के पानी से सफाई की जा सकती है। जिससे चमक दुबारा आये व रंग उतरता भी नहीं है। इस प्रकार से डिस्टेम्बर करने से कम से कम 3 वर्ष दीवारें अच्छी चमकदार रहती है और रंग खराब भी नहीं होता है।

9.1.7 वार्निश (आयल पेंट) द्वारा रंगाई

मकान को अधिक सुंदर एवं लुभावना दिखने के लिए व लंबे समय तक अच्छा दिखे इसके लिए आयल रंगों का प्रयोग हो रहा है। यह बाजारों में कई प्रकार की कंपनी के द्वारा निर्माण करके अलग रंगों में डिब्बा मिलता है। इस प्रकार के रंगों करने के लिए दीवारों पर पहले प्राइमर किया जाता है। इसके सूखने पर इसको एक प्रकार रगड़न वाले पेपर से घीसाई की जाती है और उसके बाद यह आयल पेंट ब्रुश के द्वारा किया जाता है। इस पेंट को गाड़ा हो तो पतला करने के लिए तारपीन का तेल मिलाकर पतला कर लेना चाहिए। फिर ब्रुश द्वारा दीवारों पर हल्के हाथ से पोतना चाहिए।

सावधानी

1. इस प्रकार रंग करने के पश्चात हाथों को मिट्टी के तेल से धोकर साबुन से धोना चाहिए।

2. रंग करते वक्त मुख व नाक पर कपड़ा लगाना चाहिए जिससे इसकी गंद शरीर को हानि नहीं हो।

3. रंग करने के पश्चात दो या तीन दिन पश्चात कमरे को कार्य में लेना चाहिए।

9.1.8 फर्नीचर पालिशिंग और रंगाई

घर रहने के लिए होता है लेकिन रहने के साथ–साथ प्रत्येक मनुष्य आराम की दृष्टि से और सामाजिक प्रतिष्ठा की दृष्टि से उसे अच्छी तरह सजाने की कोशिश करता है। घर को सजाने के लिए बैठक के कमरे फर्नीचर की आवश्यकता होती है। बच्चों के पढ़ने के लिए टेबल–कुर्सी की आवश्यकता

और ड्राइंग रूम को सजाने के लिए अच्छे सोफासेट की भी आवश्यकता होती है। मकान में स्वच्छ हवा एवं रोशनी हेतु खिड़की, रोशनदान, चोखटे दरवाजे, आलमारी आदि की आवश्यकता होती है। फर्नीचर दो प्रकार का होता है एक लकड़ी का दूसरा स्टील का। फर्नीचर कैसा भी हो उसके सुंदर बनाये रखने एवं उसके किसी प्रकार कीड़े नहीं लगे एवं लोहे की वस्तुओं पर जंग नहीं लगे। अतः इन्हें सुरक्षित एवं आकर्षक बनाने के लिए इन पर पॉलिश, वार्निश या रंग रोगन करते रहना चाहिए।

फर्नीचर पर पॉलिश व रंगाई की सामग्री

1. वार्निश
2. रेगमाला
3. कलर पेंट
4. पेंट ब्रुश
5. सोडा
6. प्राइमर
7. तारपिन आयल
8. मिट्टी का तेल
9. स्प्रीट से बनी कलर पॉलिस
10. मखमल का बारिक कपड़ा
11. पीली सोना मिट्टी

9.1.9 फर्नीचर पर पॉलिशिंग करना

सबसे पहले कपड़े से फर्नीचर को रेत आदि से साफ करना चाहिए। फिर गरम पानी में भिगोकर नरम ब्रुश अथवा कपड़े के साबुन लगाकर या सोड़ा पानी डाल, हल्का–हल्का रगड़ना चाहिए। जिससे यदि चिकनाई युक्त दाग हो तो साफ हो जाये। फिर ठण्डे पानी से धोकर सुखाना चाहिए। लकड़ी या फर्नीचर सुखाने के लिए छाया में रखना चाहिए। अगर पहले से पॉलिश है तो तारपीन के तेल को पानी में मिलाकर या पानी में सिरका मिलाकर इस पानी से फर्नीचर को साफ किया जाता है। अगर फर्नीचर पर दरारे या छेद हो तो उनके सोना मिट्टी में मोम मिलाकर या फेवीकाल मिलाकर भर देना चाहिए और रेजमाल से रगड कर साफ व चिकना बना देना चाहिए।

पॉलिश करना

पॉलिस दो प्रकार से की जाती है स्प्रीट पॉलिस बनी हुई बाजार में कई कंपनी की मिलती है। सबसे पहले फर्नीचर सूखने पर एक चीनी के चौड़े मुख कटौर या कप में पॉलिश डालकर मखमल के कपड़े उसमें भिगोकर उसमें उस कपड़े से लकड़ी के फर्नीचर पर पॉलिश करना चाहिये। पॉलिश एक तरफ हाथ को चलना चाहिए इस प्रकार पॉलिश करके फर्नीचर को चमकाया जा सकता है।

वार्निस पॉलिस करना

इस प्रकार की लकड़ी को साफ करने के लिए एक लीटर पानी में एक बड़ा चम्मच पेराफिन डालकर घोल सा बनाकर धोना चाहिए। धोने के बाद लकड़ी को सूखने देना चाहिए फिर इस फर्नीचर पर वार्निश या तारपीन के तेल में डालकर पतला करके उसमें नरम ब्रुश फर्नीचर पर वार्निश करना चाहिए।

9.1.10 फर्नीचर एवं लोहे फर्नीचर पर रंग करना

साफ हुए फर्नीचर पर रंग के लिए सबसे पहले बाजार में सफेद या लोहे के फर्नीचर पर रंग करने के लिए प्राइमर का उपयोग किया जाता है। प्राइमर सूखने के पश्चात फर्नीचर पर रंग किया जाता है। रंग बाजार में अलग–अलग कम्पनियों के मिलते हैं बाजार से जिस रंग का फर्नीचर पर करना है उस रंग का डिब्बा लाकर ब्रुश द्वारा रंग करना चाहिए अगर डिब्बे का रंग पतला करना हो तो तारपीन तेल डालकर पतला करना चाहिए। इस प्रकार फर्नीचर पर रंग सुखने के बाद तीन बार करना चाहिए। इससे रंग में चमक व साफ एवं धब्बे रहित रंग होता है। फर्नीचर दरवाजे खिड़कियाँ सुंदर लगेगी। फर्श पर पेंट या प्राइमर लग जाये तो मिट्टी के तेल से साफ कर लेना चाहिए। हाथ पर पेंट लगने पर मिट्टी के तेल से साफ कर उसके पश्चात् गर्म पानी व साबुन से साफ करना चाहिए।

लोहे के फर्नीचर पर जंग लगा हो तो रेजमाल से रगड कर साफ करना चाहिये और बाद में प्राइमर उसके बाद पसंद का रंग करना चाहिए।

9.2 चॉक स्टिक बनाना

भारत विकासशील देश है। विकास के लिए शिक्षा का प्रसार होना नितांत आवश्यक है। शिक्षा के लिए विद्यालयों, महाविद्यालयों का होना आवश्यक है। विद्यालयों, महाविद्यालयों में शिक्षा देने के लिए ब्लैक बोर्ड पर लिखने के लिए चॉक का प्रयोग किया जाता है। भारत के विद्यालयों और महाविद्यालयों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। अतः चॉक की पूर्ति करने के लिए विद्यार्थियों को चॉक बनाना आना चाहिए।

उपकरण

1. सांचा चॉक स्टिक बनाने के लिए जो सांचे प्रयोग में लेते हैं वे अधिकतर एल्यूमिनियम, पीतल, गन मेटल के बने होते हैं। यह दो प्रकार के होते हैं। कुछ सांचे नीचे से बंद होते हैं तथा कुछ खुले होते हैं। एक सांचे में 100 चॉक एक साथ बन जाती है। सांचा मुख्यतया 6 प्लेट का बना होता है तथा एक पंक्ति में 20 चॉक बनते हैं। दोनों सिरों पर सभी प्लेटों में समान व्यास के छेद होते हैं। जिसमें बोल्ट डालकर नट के द्वारा कस दिया जाता है।
2. **प्लायर** – इसका प्रयोग नट बोल्ट खोलने व कसने में किया जाता है।
3. **तसला** – इसमें प्लास्टर ऑफ पेरिस कर घोल तैयार किया जाता है।
4. **प्याला** – इसमें तेल रखा जाता है।
5. **ब्रुश** – इससे तेल को खांचे पर लगाया जाता है।
6. **बाल्टी** – इसमें पानी रखा जाता है।
7. **गिद्दी** – इसके ऊपर सांचे को रखकर मसाला भरा जाता है।
8. **चाकू** – इससे सांचे की सफाई की जाती है।

9.2.1 सादा चॉक स्टिक बनाना

सामग्री –	प्लास्टर ऑफ पेरिस	500
	खडिया	500
	पानी	1 लीटर
	तेल	10 ग्राम, 50 ग्राम मिट्टी का तेल 10 ग्राम

विधि

सांचे की प्लेटों को उन पर अंकित क्रम संख्या के अनुसार जमा कर नट बोल्ट कस देते हैं। तत्पश्चात उसे गिद्दी पर रखकर ब्रुश के द्वारा उस पर तेल लगा देते हैं। जिससे सभी खड्डों में समान तेल लग जाता है। इस तेल को बनाने के लिए एक भाग सस्ता तेल तथा दो भाग मिट्टी का तेल व एक भाग साबुन का पानी काम में लेते हैं।

एक बर्तन में पानी लेकर थोड़ी नील मिला दें। नील मिले हुए सवा किलो पानी के अंदर एक पाव प्लास्टर ऑफ पेरिस तथा तीन पाव खड़िया डालकर हाथ से घोल लेते हैं। घोल में पानी का अनुपात प्लास्टर ऑफ पेरिस की क्षमता पर निर्भर करता है। इसके बाद घोल को सांचे में डालकर 15–20 मिनट के लिए छोड़ देते हैं। इस सांचे से घोल बाहर गिर गया हो तो सांचे की सफाई कर लेते हैं इसके पश्चात

सांचे को जरा सा ठोकते हैं तथा नट खोलकर एक–एक प्लेट से चॉक निकालते जाते हैं। अभ्यास होने पर प्लेट को धीमे से ठोकने पर सभी चॉक नीचे गिर जाएगी। अब इस चॉक को धूप में सुखाने के लिए रख देते हैं। सुखने के बाद पेकिंग करते हैं।

9.2.2 रंगीन चॉक स्टिक बनाना

रंगी चॉक की आवश्यकता ड्राइंग, विज्ञान, भूगोल विषयों को पढ़ाने में अधिक होती है। अतः इनको बनाने के लिए जिस रंग की चॉक बनानी हो उसी रंग का सीमेंट, कलर, गोंद के पानी में मिलाकर उपरोक्त लिखित विधि से चॉक बना लेंगे।

सावधानियाँ

1. प्लास्टर ऑफ पेरिस नमी सोखने वाला पदार्थ है। अतः इसे नमी से बचाया जाना चाहिए।
2. ध्यान रहे प्लास्टर ऑफ पेरिस का घोल 5–10 मिनट से ज्यादा समय तक पड़ा न रहे। कार्य जल्दी करें तथा घोल इतना ही तैयार करे कि एक बार में काम आ जायें। यदि घोल अधिक समय पड़ा रहा तो खराब हो जाएगा।
3. अगर चॉक सही ढंग से नहीं निकलती हो तो तेल अधिक मात्रा में लगाऐं।
4. घोल में हवा के बुलबुले नहीं हो।
5. सांचे को पोलीथीन से चढ़ी गद्दी पर रखे अन्यथा घोल नीचे से बाहर निकल जाता है।
6. कार्य करने के पश्चात् सांचे को धोकर रखे।
7. सांचे एल्युमीनियम के बने होते हैं। जिन्हें ठोकने से टूटने का डर बना रहता है। अतः हल्का ही ठोके।

9.3 दरी–पट्टी, आसन और निवार बनाना

9.3.1 दरी–पट्टी, आसन बनाना

विद्यालय में बालक–बालिकाओं को बैठने एवं बिछाने के लिए दरी–पट्टी एवं आसनों की आवश्यकता होती है तथा घरों पर दावत एवं मेहमानों को बैठने हेतु दरी–पट्टी की आवश्यकता होती है। आसनों का उपयोग घरों में भजन करते समय तथा धार्मिक कार्यक्रमों तथा शादी–पार्टियों में किया जाता है।

सामग्री

(1) चार खूंटे (2) 200 बाँस के पोल (3) बया की दो पतली मजबूत एवं गोल लकड़ियाँ (4) पंजा (5) एक गोड़ी सेट (6) सूत लपेटनी की लकड़ी तथा कच्चा–पक्का सूत आवश्यकतानुसार।

सूत

हाथ से बना काला सूत काम में लिया जाता है। आजकल मिल का सूत भी काम में लिया जाता है। 4.6 अंक के हाथ से कटे सूत के 4 धागे आपस में एक साथ बटकर ताने का सूत तैयार किया जाता है तथा ताना बनाने के लिए वही सूत तथा 8 तार का तैयार कर लें। ताने का सूत लगभग 300 ग्राम, एक दरी पट्टी 2" x ½" के लिए तथा 800 ग्राम सूत बाने के लिए आवश्यक है।

यदि मिल का सूत काम लेना हो तो ताने के लिए 6" x 3" या 6/4, 10/3 अंक का कोई सा भी सूत बाजार से 500 ग्राम खरीदें तथा बाने के लिए 6 अंक का एक किलो सूत लेकर 6 या 8 तार आपस में मिलाकर तैयार कर लें। यदि पट्टी को रंगीन बनानी हो तो बुनाई करने से पहले बाने के सूत को

मनपसंद रंग लिया जाये व सुखाया जाये।

ढ़ांचा स्थिर करना

दो मीटर लंबी दरी बनाने लिए ढाई मीटर की दरी या आधा मीटर चौड़ाई के हिसाब से आमने–सामने दो–दो खूंटे गाढ़ दें। अपनी तरफ से दोनों खूंटों के पीछे एक पोल रख दे। सामने वाले खूंटों में मोटा रस्सा लेकर आधा मीटर के फंदे में पोल फंसाकर स्थिर कर दें।

ताना बनाना

ताने के लिए बट लगाकर तैयार किए गए सूत को ले सूत का मुंह पहले वाले पोल के गांठ लगाकर बांध दें और बाकी सूत को लेकर सामने वाले दूसरे पोल के ऊपर से नीचे की ओर निकालते हुए पहले वाले पोल पर ऊपर से नीचे निकालें। इस प्रकार से आवश्यक धागों की संख्या चौड़ाई में पूरी कर लें धागे के बीच में क्रास बन जायेगा। इस प्रकार आधा मीटर चौड़ाई में 75 या 80 तार ताने के बनाने से ताना बन जायेगा।

बय बनाना

ताने के धागों को ऊपर–नीचा करके बीच में खाली स्थान बनाने के लिए बय बनाई जाती है। बीच के बने खाली स्थानों को दम या शेड कहते हैं। इसी खाली स्थान में बाने के आड़े धागे डाले जाते हैं।

बय बनाने के लिए पतली मजबूत बढ़ी हुई डोरी काम में लेते हैं। बय के फंदे भी डोरी की लंबाई 5 या 6 इंच से अधिक न हो। यह फंदे प्रत्येक ताने के तार पर बनाये जाते हैं। इस प्रकार से दोनों पोलों की तरह ऊपर वाले तारों पर बय के फंदे बनाये जाते हैं। दोनों बय बन जाने पर प्रथम पोल की तरफ लाकर एक दूसरे के पास कर देते हैं।

बुनाई करना

बुनाई प्रांरभ करने से पहले इसे गोड़ी, को ताने पर रखकर दोनों के आखिरी हिस्सों से थोड़े अंदर की तरफ गोड़ा गांठ लगाकर मोटी रस्सी बांधी जाती है। इसी रस्सी के दोनों छोरों को मकोड़ी (दो डंडी) जिसकी लंबाई आधा फीट की लगभग होती है। इन्हें गोड़ी की आड़ी लकड़ी पर रखकर साफ्ट से बांधी गई रस्सी से गांठ द्वारा बांध देते हैं। अब इनके द्वारा ऊपर नीचे करके दम या शेड बनाते हैं । बनाये गये में बाने के धागे डालकर पंजे द्वारा ठोकते जाते हैं। मकोड़े को ऊपर नीचे करने की क्रिया बार–बार की जाती है और प्रत्येक बार बाने का धागा डालकर ठोकना पड़ता है। इस प्रकार से बुनाई की क्रिया हो जाती है। पूर्ण बुनाई होने पर काट कर पट्टी को अलग कर देते हैं।

इसी प्रकार आसन की लंबाई कम करके बनाये जाते हैं।

सावधानियाँ

1. दम या शैड बराबर बनना चाहिए ताकि बाने का धागा आसानी से डाला जा सके।
2. ताना समान खिंचाव में रखना चाहिए।
3. बाने के धागों की ठुकाई बराबर करनी चाहिए अन्यथा खड्डा बन जायेगा।
4. बाने के धागों को बराबर चुटकी देकर ठीक लगाना चाहिए।
5. सुंदर बनाने के लिए समान दूरी पर रंगीन बाने के धागों का प्रयोग भी करते रहना चाहिए।
6. रंगीन दरी व दरी–पट्टी एवं आसन बनाने हेतु बाने के सूत को रंग लिया जाता है।
7. दरी–पट्टी एवं आसन की प्रक्रिया एक ही है। केवल लंबाई और चौड़ाई में अंतर है।

9.3.2 निवार बनाना

वर्तमान युग में निवार की उपयोगिता गरीब व अमीर व्यक्ति को होती है, क्योंकि गरीब अपनी खाट की बुनाई करता है तो अमीर व्यक्ति इसको पलंग बनाने में लेता है। छात्र इसको बनाना सीखकर आर्थिक अर्जन कर सकते हैं।

आवश्यक सामग्री

बटा हुआ अथवा कच्चा सूत, निवार बनाने के अड्डे, थप्पी, खूंटे आवश्यकतानुसार बय बनाने के लिए बढ़ी हुई पतली डोरी, रंगीन बनाना हो तो रंगा हुआ सूत।

रंगा हुआ सूत

हाथ का सूत काम में लेना हो तो 4, 7 अंक के 4 धागे आपस में मिलाकर बट कर पक्का धागा तैयार करें। बाजार से खरीद कर लाना हो तो 6/3 या 6/4 नंबर का सूत ले।

1. खड़े धागों को ताना कहते हैं जो लंबाई में होते है।
2. आड़े धागे – ये धागे चौड़ाई में प्रत्येक दम या शैड में डाले जाते हैं। जिन्हें थप्पी से ठोक कर बुनाई करते हैं।

आवश्यक लंबाई में आमने–सामने खूटे गाढ़ देते हैं। बीच में 2–4 मीटर के फासले पर लीज डालने के लिए एक–एक जोड़े के हिसाब से पतली, लंबी और चिकनी लकड़ियाँ गाढ़ देते हैं। खूंटा नंबर 1 पर ताने के पहले धागों की गांठ लगाकर बांध देते हैं। इसी से थोड़े फासले पर निवार अड़ा रख देते हैं। जिस पर निवार बय बनी हुई होती है। ताने का पहले धागा अडडे् की ऊपर वाली आड़ी लकड़ी पर तो लेते हुए बय के फंदे से निकालकर सामने खूंटा नंबर 2 के लगाते हुए खूंटा नं 1 की ओर आते हैं। आते वक्त बीच में रखे अड्ड़े में बनी हुई बया से लेकर ऊपर वाली आड़ी लकड़ी के नीचे वाली आड़ी लकड़ी के ऊपर से दो बयो के मध्य में खाली स्थान से निकालते हुए खूंटे तक आ जाते हैं। इस प्रकार से विषम तारों को ऊपर वाली लकड़ी के ऊपर से लेते हुए बया में पिरोकर निकालते हुए खूंटा नं 2 तक ले जाते हैं। सम तारों को खूंटा नं 2 में लेते हुए 2 बयां के मध्य से नीचे वाली आड़ी लकड़ी के ऊपर से गुजार कर खूंटा नं 7 से बांध देते हैं। इस प्रकार से ताने के धागे दो धागों में विभक्त हो जाते हैं।

बुनने की विधि

बया में पिरोए गये धागे ही स्थान पर स्थित रहते हैं। इधर–उधर नहीं हो सकते हैं। बयां के मध्य में लिए गए धागे ही सीधे ऊपर–नीचे किए जाते हैं। ऊपर–नीचे करने से धागों में खाली स्थान बन जाता है। इसे दम या शैड कहते हैं।

इसी दम में बाने का धागा डालकर थप्पी की सहायता से ठोक देते हैं। इस प्रकार से यह क्रिया बार–बार करते रहने पर बुनाई होती रहती है। ज्यों ही ठोकने की क्रिया पूर्ण हो तत्काल दम या शैड बना चाहिए। बुनाई करते समय 3 क्रियाएं की जाती है – (1) दम या शैड बनाना (2) बाना डालना (3) ठोकना इसमें तीनों क्रियायें एक–दूसरे पर निर्भर है। यदि एक क्रिया भी नहीं की गई तो बुनाई की क्रिया होना असंभव है।

सावधानियाँ

1. ताने के सभी धागे खिंचाव में होने चाहिए।
2. ताने का धागा टूटने पर तत्काल जोड़ देना चाहिए अन्यथा अन्य धागों में फंसकर दूसरे धागों को

तोड़ देगा।

3. ताने के धागों की ठुकाई समान की जाए।
4. ताने के धागे आपस में उलझ गए हो तो उन्हें उसी समय ठीक कर लें।
5. अड्डे पर बय बनाते समय गोड़ा गांठ का प्रयोग किया जाना चाहिए।
6. ताने का सूत मोटा होने पर 50, 60 धागों का ताना बनाया जाता है, बारीक होने पर 100 तारों का होना चाहिए।
7. निवास की भांति ही नाड़ा बुना जाता है परन्तु इसमें ताने के धागों की संख्या कम रखी जाती है।

9.4 कुर्सियों पर केनिंग अथवा सरकंडे का कार्य

कुर्सियों पर केनिंग प्लास्टिक के धागे अथवा डोरियों से की जाती है। कुर्सियों पर केनिंग करने के लिए सर्वप्रथम कुर्सी के जिन स्थानों पर केनिंग की जाती है उनके छिद्रों को साफ किया जाता है। इसके बाद केनिंग की जाती है।

केनिंग की सामग्री

1. वस्तु कुर्सी पर केनिंग करना है।
2. प्लास्टिक के तार या डोरी
3. बैत के तार एवं डोरी
4. खूँटी तीन

केनिंग बनाना

पहले उसके आड़े तारों को लगाया जाता है उसे बाना कहते हैं। फिर लंबे तारों या डोरी से लगाकर डिजाइन के अनुसार आड़े तारों में से निकाला जाता है और खूँटी से इनको कस दिया जाता है। अगर रंगीन बनाना हो तो रंगीन रंगकर तार या डोरी का प्रयोग किया जाता है।

इस प्रकार पूर्ण डिजाइन बुनने के बाद आडे व लंबा तारों या डोरी एक कोने में ले जाकर बांध दिया जाता है। केनिंग करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि न तो केनिंग अधिक ढीली हो न ही अधिक कसी हुई हो।

अभ्यास प्रश्न–

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. मजबूती के आधार पर मकान कितने प्रकार के होते हैं
   (अ) दो (ब) एक (स) तीन (द) चार
2. निम्न में से क्या फर्नीचर के रख रखाव में प्रयुक्त नहीं होता है?
   (अ) रंग (ब) पॉलिश (स) ऊन (द) वार्निश
3. निवार बनाने में जो धागे लम्बाई में होते हैं, वे कहलाते हैं?
   (अ) आड़े धागे (ब) ताना (स) शैड (द) खाट

4. निम्न में से क्या भवन को रंग करने में प्रयोग में लाया जाता है?

(अ) साधारण डिस्टंबर (ब) ऑयल डिस्टंबर

(स) वार्निश (द) उपरोक्त सभी

लघुत्तरात्मक प्रश्न

1. मकान को किससे पोता जाता है?
2. भवन की पुताई व रंगाई करना क्यों आवश्यक है?
3. भवन की दीवारों पर पुताई करने के लिए किन–किन सामग्री की आवश्यकता होती है?
4. भवन व पक्के मकान सुन्दर व स्वच्छ रखने के लिए कितने प्रकार का रंग किया जाता है?
5. दरी पट्टी की क्यों आवश्यकता होती है?
6. दरी पट्टी बनाने के लिए कौन–सी सामग्री की आवश्यकता होती है?
7. निवार का उपयोग कहाँ पर किया जाता है?

निबन्धात्मक प्रश्न

1. फर्नीचर पर पॉलिशिंग किस प्रकार से करते हैं?
2. लोहे के फर्नीचर पर रंगाई किस प्रकार से की जाती है?
3. चॉक स्टिक बनाने में कौन–कौन से उपकरण उपयोग में लाए जाते हैं?
4. चॉक स्टिक बनाने की विधि को लिखिए।
5. चॉक स्टिक बनाते समय कौन–कौन सी सावधानियाँ रखनी चाहिए?
6. ताना कैस बनाया जाता है?
7. दरी पट्टी बनाते समय कौन–सी सावधानियाँ रखनी चाहिए?
8. निवार बनाते समय कौन–कौन सी सावधानियाँ रखनी चाहिए?

उत्तरमाला (वस्तुनिष्ठ प्रश्न) :

1. (अ) 2. (स) 3. (ब) 4. (द)